आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021
Received:02\12\2021; Published:24\12\2021

कविताएं

डॉ.नामदेव एन. गौड़ा, भेड़िया ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर ,2021(180)

भेड़िया

जब कभी तुम्हें...
भाषण का स्वाँग रचाते,
जब कभी तुम्हें...
जनता के दर्द में
आहें भरते,
फिर भी बात - बात पर
लोगों से डरते
देखता हूँ तो लगता है,
दानव कहीं और नहीं
साये की तरह
हमारे ही साथ
मंच पर सीना तानकर
भाषण दे रहा है।
लोगों का रक्त चूँसते हुए
कहता है— नेता हूँ मैं,
मेरे प्रदेश में कहीं भी अकाल नहीं।
होता अकाल तो
मेरा विरोध न होता?
भाषण सुनने न आते, दूर-दूर से
घंटो तक न प्रतिक्षा करते।
कहता हूँ मैं.....
घूमना - फिरना छोड़ दो
तो.....
न रहेगी गरीबी, न अकाल।
तब भी.....
नीरस तालियों की गडगडाहट से कांपने लगता है रोम – रोम
तब मन ही मन हँसता है
बकरे हो तुम सब,
और मैं एक भेड़िया।

- **डॉ.नामदेव एन. गौड़ा**